EPCH
हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद्
Connecting. Empowering. Transforming.
EXPORT PROMOTION COUNCIL FOR HANDICRAFTS
CIN: U20299DL 1986NPL023253 | GST NO. 07AAACE1747M1ZJ

प्रेस विज्ञप्ति (कर्टेन रेजर)

भारतीय हस्तकला उत्सव 2026

कोलकाता, पश्चिम बंगाल

26 से 29 मार्च, 2026

सदियों पुरानी विरासत और जीवंत परंपराओं को दर्शाते विश्वसनीय जीआई-टैग वाले भारतीय हस्तशिल्पों का जश्न

23 मार्च 2026, कोलकाता: हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद (ईपीसीएच) 26 से 29 मार्च 2026 तक कोलकाता के एक्रोपोलिस मॉल में भारतीय हस्तकला उत्सव 2026 का आयोजन कर रहा है। इस कार्यक्रम को खास तौर पर एक राष्ट्रीय मंच के रूप में तैयार किया गया है, ताकि जीआई (जियोग्राफिकल इंडिकेशन) टैग वाले हस्तशिल्पों को बढ़ावा दिया जा सके और लोगों को भारत की पारंपरिक शिल्प कला विरासत और जीआई टैग वाले उत्पादों में मौजूद कहानियों के बारे में विस्तार से जागरूक किया जा सके। यह आयोजन एग्जीबिशन-कम-सेल के रूप में होगा, जहां आगंतुक वास्तविक भारतीय हस्तनिर्मित उत्पादों को देख और खरीद सकेंगे।

यह भव्य आयोजन देशभर से जीआई-टैग वाले हस्तशिल्पों का एक खास कलेक्शन पेश करेगा। जीआई टैग एक तरह का बौद्धिक संपदा अधिकार होता है, जो किसी उत्पाद को उसके मूल जन्म स्थान, उसकी खासियत, पहचान या गुणवत्ता के साथ उसके जुड़ाव का प्रमाण देता है। साथ ही जीआई टैग यह बताता है कि वह उत्पाद उस खास जगह पर बनाया जाता है यही उसकी खासियत है।

एक्सपो शुरू होने से पहले ईपीसीएच अध्यक्ष डॉ. नीरज खन्ना ने कहा, भारतीय हस्तकला उत्सव 2026 भारत की वास्तविक और क्षेत्र विशेष शिल्प कला का जश्न है, जहां हर एक जीआई-टैग उत्पाद अपने क्षेत्र विशेष की पहचान, वहां के समुदाय की कारीगरी और परंपरा के निर्वहन को साथ लेकर आ रहा है। बहुत बड़ी संख्या में आगंतुकों के आगमन वाले कोलकाता जैसे बड़े प्लेटफॉर्म पर जीआई टैग वाले उत्पादों के कारीगरों और पुरस्कार विजेता शिल्प गुरुओं को लाकर हमारा मकसद जागरूकता बढ़ाना, लोगों के बीच उनकी सराहना और सीधे बाजार से उन्हें जोड़ना है, ताकि कारीगरों की आजीविका को मजबूती मिले और लोग वास्तविक जीआई टैग वाले उत्पादों को खरीदने के लिए प्रेरित हों।"

डॉ. खन्ना ने आगे कहा, "इस मेले में देशभर से आने वाले जीआई-टैग वाले हस्तशिल्पों का एक समृद्ध और विविध संग्रह देखने को मिलेगा। इसमें भाग लेने वालों में राष्ट्रीय पुरस्कार और शिल्प गुरु पुरस्कार विजेता जीआई टैग वाले उत्पादों के करीब 50 कारीगर शामिल हैं, जो अपने पारंपरिक उत्पाद प्रस्तुत करेंगे, जो भारत की जीवंत सांस्कृतिक विरासत, सामुदायिक ज्ञान व्यवस्था और दीर्घकालिक डिजाइन परंपरा को दर्शाते हैं।"

ईपीसीएच के उपाध्यक्ष श्री सागर मेहता ने कहा, "जीआई टैग वाले शिल्प केवल विरासत ही नहीं बल्कि मानवीय मूल्यों से जुड़े खास उत्पाद हैं, जिनकी जड़ें सदियों पुरानी हमारी कारीगरी से जुड़ी हैं। भारतीय हस्तकला उत्सव यहां आने वाले आगंतुकों, डिजाइनर्स और रिटेल खरीदारों को एक ही छत के नीचे जीआई टैग्स वाले उत्पादों को देखने का मौका देता है और कारीगरों को सीधे बाजार से जुड़ने

का प्लेटफॉर्म भी मुहैया कराता है। हमारा खास ध्यान कारीगरों और उद्यमियों की मदद करना है ताकि वो अपनी बेहतरीन प्रस्तुतियों और स्टोरीटेलिंग से अपनी पहचान बनाते हुए खरीदारों से जुड़े और अपनी पहचान को मांग में बदल सकें।"

ईपीसीएच की प्रशासनिक समिति (सीओए) के सदस्य और पूर्वी क्षेत्र के संयोजक श्री ओ. पी. प्रहलादका ने कहा, "कोलकाता हमेशा से कला, शिल्प और विरासत से जुड़ा शहर रहा है, जहां हाथ से बने उत्पादों की कद्र रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा है, चाहे वो पारंपरिक कपड़े हों, घर की सजावट हो या त्योहारों और लाइफस्टाइल से जुड़ी खरीदारी। भारतीय हस्तकला उत्सव हमें मौका देता है कि हम भारत के जीआई-टैग वाले शिल्प को एक जीवंत और ज्यादा लोगों तक पहुंचने वाली जगह पर लेकर आएं, ताकि परिवार, युवा खरीदार, डिजाइनर और कला प्रेमी असली और क्षेत्रीय उत्पादों को आसानी से देख सकें।"

यह मेला चारों दिन सुबह 11 बजे से रात 9 बजे तक खुला रहेगा। मेले को बिजनेस-टू-कंज्यूमर (बी2सी) इवेंट के रूप में आयोजित किया जा रहा है। इसका मकसद मौके पर बिक्री को बढ़ावा देना है, साथ ही बड़े खरीदारों, रिटेल ग्राहकों और अन्य प्रोफेशनल्स के लिए भी अच्छे अवसर उपलब्ध कराना है।

हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद के कार्यकारी निदेशक श्री राजेश रावत ने कहा, "ईपीसीएच लगातार जीआई टैग वाले शिल्प को बढ़ावा देने के लिए काम कर रहा है और खास तौर पर छोटे और मझोले उद्यमियों, कारीगरों और शिल्पकारों के लिए प्रभावी मार्केटिंग प्लेटफॉर्म तैयार करता रहा है। यह प्रदर्शनी जीआई-टैग वाले उत्पादों की एक खूबसूरत और विविध रेंज पेश करेगी, जिसमें अलग-अलग क्षेत्रों की खास कारीगरी और एक्सपोर्ट क्वालिटी के हस्तनिर्मित उत्पाद एक ही जगह मिलेंगे। यहां आने वाले लोगों को मधुबनी और मिथिला पेंटिंग, सुजनी कढ़ाई, बिहार की एप्लिक वर्क, पश्चिम बंगाल की पटचित्र और नक्शी कांथा, बिहार के भागलपुर की मंजूषा पेंटिंग, झारखंड की हाथ कढ़ाई और क्रोशिया, ओडिशा की आर्ट मेटलवेयर और इमिटेशन ज्वेलरी जैसे असली शिल्प को करीब से समझने और उन्हें बनाने वाले कारीगरों से सीधे मिलने का अनोखा मौका मिलेगा।"

हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद देश से हस्तशिल्प के निर्यात को बढ़ावा देने वाली एक प्रमुख संस्था है, जो लाखों कारीगरों और शिल्पकारों के हुनर को एक ब्रांड के तौर पर पहचान देने का काम करती है। ये कारीगर देश के अलग-अलग क्लस्टर्स में होम, लाइफस्टाइल, फर्नीचर, फैशन ज्वेलरी एवं एक्सेसरीज जैसे उत्पाद बनाते हैं. ईपीसीएच के कार्यकारी निदेशक श्री राजेश रावत ने बताया कि साल 2024-25 में भारत से हस्तशिल्प का कुल निर्यात 33,123 करोड़ रुपये (3,918 मिलियन अमेरिकी डॉलर) का रहा।

विस्तृत जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें:
श्री राजेश रावत, कार्यकारी निदेशक – ईपीसीएच
+91-9810423612

EPCH हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद् Connecting. Empowering. Transforming.

EXPORT PROMOTION COUNCIL FOR HANDICRAFTS

CIN: U20299DL 1986NPL023253 | GST NO. 07AAACE1747M1ZJ

PRESS RELEASE (Curtain Raiser)

Bhartiya Hastkala Utsav 2026

Kolkata, West Bengal

26th – 29th March 2026

A Celebration of Authentic Indian GI-tagged Handicrafts, Showcasing Timeless Heritage and Living Traditions

23rd March 2026, Kolkata: The Export Promotion Council for Handicrafts (EPCH) is organising the Bhartiya Hastkala Utsav 2026 from 26th to 29th March 2026 at Acropolis Mall, Kolkata. The event is curated as a focused national platform to celebrate and promote Geographical Indication (GI)-tagged handicrafts, while creating wider public awareness about India's traditional craft heritage and the stories embedded in GI products. The event will be held as an exhibition-cum-sale platform, offering visitors an excellent opportunity to explore and purchase authentic Indian handcrafted products.

This grand event will showcase an exclusive collection of Geographical Indication (GI) tagged handicrafts from across the country. A Geographical Indication (GI) Tag is a form of intellectual property right that identifies a product as originating from a specific place, where a particular quality, reputation, or characteristic of the product is essentially due to its geographic origin.

Speaking ahead of the Expo, Dr. Neeraj Khanna Chairman, EPCH said that "Bhartiya Hastkala Utsav 2026 is a celebration of India's authentic, place-based crafts where every GI product carries the identity of its region, the skill of its community and the continuity of tradition. By bringing GI artisans and award-winning craft masters to a high-footfall public platform like Kolkata, we aim to create stronger awareness, wider appreciation and direct market linkages that support artisan livelihoods and encourage buyers to choose genuine GI products."

Dr. Khanna further added, "the fair will bring together a rich and diverse collection of GI-tagged handicrafts from across the country. Around 50 GI craft artisans from different regions of India including National Awardees and Shilp Guru Awardees will participate and present their traditional craft products, reflecting India's living cultural heritage, community knowledge systems and enduring design legacy."

Shri Sagar Mehta, Vice Chairman, EPCH said, "GI crafts represent both heritage and value products that are unique, traceable and rooted in centuries of workmanship. The Bhartiya Hastkala Utsav offers an opportunity for visitors, designers and retail buyers to discover GI-tagged collections under one roof, while giving artisans a platform to engage directly with the market. Our focus is to help artisans and enterprises convert visibility into demand through better presentation, storytelling and buyer connect."

Shri O. P. Prahladka, Member Committee of Administration (CoA), EPCH & Convenor – Eastern Region, said, "Kolkata has always been a city with a deep cultural relationship with art, craftsmanship and heritage where appreciation for handmade products is part of everyday life, from traditional textiles and décor to festive and lifestyle buying. The Bhartiya Hastkala Utsav enables us to bring India's GI-tagged

crafts into a vibrant, high-footfall public space, making it easier for families, young shoppers, designers and craft lovers to discover authentic, place-based products.

The fair will be open to visitors on all four days from 11:00 AM to 9:00 PM and is being organized as a Business-to-Consumer (B2C) event. It aims to promote on-the-spot sales while also offering significant opportunities for volume buyers, retail shoppers and other professionals.

Shri Rajesh Rawat, Executive Director, EPCH, remarked, "EPCH has consistently worked to promote GI crafts by creating effective marketing platforms, especially for micro and small entrepreneurs, artisans and craftspeople. This exhibition will present a vibrant and diverse range of GI-tagged products, bringing distinctive regional craftsmanship and export-quality handmade excellence under one roof. Visitors will get unique opportunity to discover authentic crafts such as Madhubani, Mithila painting, Sujani embroidery, Appliqué work from Bihar; Pattachitra & Nakshi Kantha from West Bengal, Manjusha Painting from Bhagalpur, Hand Embroidery & Crochet, Jharkhand, Art Metalware, Imitation Jewellery from Odhisha and more understanding their heritage value and engaging directly with the makers behind these iconic traditions.

Export Promotion Council for Handicrafts is a nodal institute for promotion of exports of handicrafts from the Country and create brand image of magic of the gifted hands of millions of artisans and crafts persons engaged in production of home, lifestyle, furniture and fashion jewellery & accessories products in different craft clusters of the Country. The overall Handicrafts exports during the year 2024-25 was Rs. 33,123 Crores (US $ 3,918 Million), as informed by Shri Rajesh Rawat, Executive Director-EPCH.

For more information please contact:
Shri Rajesh Rawat, Executive Director – EPCH
+91-9810423612